100 C CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

ने का मयी -का श्रीमत्रोशानममः कैतास्थात्वरेरम्येनानाद्वग्तावते नानायश्वतत्त्वीर्रोतानायशिर्येपते १ चतुर्मात्वसंपुति शंकार मंडपे स्थिते समाधी संस्थितं शानां की उनां थो जिना जिपम र तत्र मी न घरं हस्या देवी पन्छ ति शंकरम देव्य याच किल्पानपतिनाप किन्त्वपा सम्पतिस्त लिकः कुन्निलिना सिवनः कुन प्रनापते ३ प्रकारकार्तिकनित्रमा व्यार्गामहत् मनोर्थमपीति दिवा क्विति दिल्यों क्रांच ४ तती वैकत्यना ति दिः को दिति दे १वर्न मे शक्तिपी ना में हर्शकं बराबर्परीगतिः प् महेन्द्र नाल मिन्तिर् नेताना रचना तथा अलामारव बराय न्यंपरका पत्रचेश नम् १ नवानसिकर्तासम्द्रतावतान्या अप्रापानस्संदर्भादिवावस्य आश्रानं ण वस्तिकत्वासिक्तिवास्पारसंवीय जल जल जाय निविद्धि प्रमालक र बक्षिय के शिवि की लाकिन्या में रतायरं पाइका गृहिका प्रमाल प्रम प्रमाल प्रम प्रमाल प्र ख्वा २

के द्वारियोगामरस्य परापता तिर्द्धान्यतिरेनीययायर्व पार्य देश वृगारिसमपेरेनीशिवंपर्गतानर्म् नार्द्धानिर्शताका समित्र सम्बद्धान स्विग्रहम् २२ सार्यतं सुक्रेर्र्यपुतंपर्म स्राहिना यं गुतातितं का श्रीतप्रतमीरवर् रूर विषरितरतं रेवंसो मेर्ध्यपरापरां पूजा किमाजता नेवान गंध्वीकार्सा जागा न रू प क्रियोक्ति करीं मत्यें स्ववें प्रपाचा तिला नामा वीक्यत काप पा प्राहत करीं प्राया वस्त्र भे २५ वेलोक्प सुक्रीं प्राया खिलि नीत्रातारं निनी किमागतंत्रवयाप्यींग्पातिवो भहान् २६ उत्ताभीनप्रंशंभुप्तपं सक्तिगताः गर्भ जीड्यः हिरारा नारि तोर्यत पा विश्वत न प्रिय २७ सकेरारे भकार्या थि म वक्तो निम्हा भो वैश्प कृताम हेर्व मंगता चैत्र जापताम् २० त्रपातात्मवनाले तुसमा रं मेत्र जापतां वृजापारं मं प्रावे हिव ति मह्या कुट दुस्ती को एक्सित समाप्त्रका जिन्हा के जान का सी के स्वास के सिकार के राज्य समाप्त

इयः केनमंत्रेशातपसाक्तीपापसमाकृते १९ आप्रध्यप्रशिष्ठते कर्षभविताहर १२ शिव उवाच विना मंत्रिविताहता विनेयतप्साष्ट्रिये विनाध्यानं विनापनं विनाप नादिनाष्ट्रिय विनाय्यित विनान्पातं भूत प्रदिविनाष्ट्रिय विना केलाहिन हैं विहेद्द खाहिति विना १३ विदिव हैं भेने पन तर्वे अपाते महिल प्रेम बसारा जाते तृपे नापात प्रम मध्येन १४ व म्यू त्ये स्पितातारासर्वा लेका विका स्थिता स्वनंत को दिश्व हों उरांन देता यके शिवे स्थाप्य देश स्था क्षा अवस्त्र ताक स्मवर्णियापच महानिर्गुराहिषात्र वाक्षात्राता पर क्रीड पाद्रात्महर्षेत्र भर्तार् चत्र कत्यप त स्रेतरंभ काने बकापार्छातरा तथा २० इच्छा ग्रुकि स्तुसा जाता कात्यां का दोविनि मिनः वितिविन् मुन्द्र मातारानानि पात्सा १ इस्मेतिकि विशिष्ट सीनीचे सानके परा तराकिपादिपानातातिहरू नामहेत्रवरी १८ अस्त्रांडगो लेहेचेश्रिरातदतस्थितंत्रपत् साक्रिपाच्याचयात्रास्यस्थाने बुँभेप्य रत्त्रेय CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

भाना प्रत्मा (लंबुकातर्भित्या के क्षाना क्ष अमसंकुल तराकात्याकृपानाता ममिनतापर शिवः ४५ पंत्रप्रसार्विद्धान्त्री क्रिंत्तीत्वरम् पंत्रेतातंतरार्भ पूर्व विद्यानगोचरे ४६ अत्रीचक्र राजप्रसार रचनाभ्यासत्तर इतस्ततान्त्राम्य मार्गित्रे से चेक्र मध्ये ग्रेस् हे ९ चक्रपार द्रीक र्धकाळार्वेर्यगंगतम् भक्तापात्रिपादेवीमराष्ट्री यक्षापिका ४० तत्रविन्दीपर्हपेतुन्द्रं सुमनोहर्म् हपंजातंमहे शानिजाग्र ति अरम देशिम ४६४ ६पंट छा महादेशे राजराजे व्यक्ते सभूत् तस्याकरा समात्रेतातस्याह्न परा क्रियः परि मार्गार्मपुतातरामाना महेश्वरा विमाकात्यंशातो देविमग्रस्या वर्मग्रम स्प्रवारा नेशाति वं काविमाति महेश्यि सुर्माषार्थिताकालीनुष्टाप्रोवाचकातिका पर सर्वेषाने नके क्रोब्रम्मां शोजभविष्यति प्रविच्यासरेव शिममारोतिक तिप्रिये पर सायस्यातह्सारियास्तर्भिनेवतिकति मर्मभक्तीमहेशानिसर् तिकृति निष्ठितम्पर र 

W(404140 BIS) सानंद्दरी नार्थित में सेना तार्ष्यु में ता देव चा लाये सी व्यासारित देव दिला का मिली नो नान्य त्सी व्यास हिन्द सार्ति देव सार्ति स्थाने सार्वित सार्व ध्यानिहतामापपातुषोवाचकालिकापति 'कालिकालिहें उमालेषिये मेर्य नाहिनी ३४ किया हपे भरे वारहे छा भकानके वेताकामू स्वाकित्युन्त्रीतित्रयतः ३५ सुन्तिवाक्षियां कर्क्षियां काति विवेद्यां अपानं मुन्यमहिरेवी तार्ये किता प्रति ३६ तैर्रे महाका अभिमका अभिषेत्र हे हता से मुन्द्रिये जै तोका त्रिप का दूर्व हव मापा क्रमापिको महा का वी ब्हिनी इध्धालवय श्रुताक्वाले आह्मका दिका इस् माप पा छाचचात्मा नं निज खीरपधारिती इतः प्रतिखीमा नेभविष्वति पूर्वे मुक्ते इथे क स्यादी व प्रवे दिविर्गव के सिक्ष प्रताम तत्री स्वीर्प मा साथ की उपनी प्रति प्र मां चैव सर्वेद्यां निविधानिष्ठा पूर्वा एवं शावेष्ठ ह्या तेष्ठ के प्रोची किया कि विषयित एति स्वापित अने ति ने नेषायुं प्रास्पामित्त्र विसंबद्धा महत्त्र अत्र ब्रह्मका कालिया विद्यात है वानियर्व वर्य न न वस विक्रदेशाधकोरेन एकाचनु स्वर्मना प्र

योगीनुहरूपागारा हिवानिशिविपर्ययाह विषश्ताहिवानिशीविपशतारसातुरा ६८ क्षरगान् छाच प्रत्यक्षाश्चिमात्नाज्ञयप्रया खद्गहस्तोमुक्रकेशोदिगच्चर्विभूष्ट्रितः ६९ शय्यास्योच्चिनानन्स्वे १यास्याः परेन्नामसहस्राखेदियसामाज्यनामके १० यद्यादित्यासतैस्तत्राप्रशनास् णमात्रतः तथाने नक्षणात्या लीपसन्ना पाडमात्रतः ११ वय्यते नाम त्रोहस्त्रात्यधान्मनाश्र ण अस्वसाम्रात्ममेधाः व्यंनामसाहस्रक्षसम् ३० महाकाली मिषः प्रोत्तरि सिक् व्हेष्टिभीति तः देवतोद्क्षिणकालीमायावाजेष्रकार्तितं १३ द्वंश तिः कालिकावीजेकीतंकेपरिकीर्तितं का जिकावरदानाहि श्रेषाय विनियोगतः अर कर्ररेण बड्डानियः हिर्दिनैयकार्येत ध्यानच सर्व वन्यत्वासाधयेन्द्रोष्ट्रसाधनास् अक्षेत्रीक्षाक्रीक्षेत्रस्त्रीक्षेत्रस्तास्याक्रमत्तानंना यतावतीय क्रीकि क्षाने नर्दि-

काली चित्रम् सम्पा तदाकाली त्रम् न्याभूता भूता विमिनि क्रितम् पर वरं ब्रह्मियं वृहिवरं ब्रह्मिति मार्दि मन्दर्य वाच ममनामा सहा पापक व्यप वेन क्षा कि अविमान का समनाम सहस्व चम्पा

पूर्वविनिर्मितम् मत्वहपंजकारात्वं रिव्यमाम्राज्यनामकम् वरदानाभिष्वनामकरणाद्वीद्ररापकम् पटन्तम् स्वमरामापेत्वक्रीकि भविष्यति ततः प्रश्रति श्रीविषातन्नामपाहतत्तरा ६० तर्वनामसाहस्त्र त्रीक्रितिराप्क क्रोधोपप्रामनेत्रातः मध्यान्त् कतम्स्री ५१ एवा साधान्य मध्यात्वा संध्याकाले पहेन्तरः अईरात्रे महे प्रानिसार्षा भिपमेग्य ध्र अभित्रपाभागासाधपस्य महेश्यरि मधेमीसे सापाश्ये मिसे रहेस या प्रिय तर्जिय मुन्ति नीविषरितरतिचरेत् विषरी तरती देखि दाक्षितिकति निस्त्राः प्राध्वीक्ष्य ऋषे ऋषे प्रमेषुने निया विका पेस येथाप का विचा प्रत्यों न वा सिनीचं रो ६५ और सा जनसे तुस्य वी तास्त्र न ति नार्मी किंवा चित्र स्ट्यानी प्रियो स्पादिन सिनार्म किंवा चित्र स्ट्यानी किंवा स्थाप स्थाप स्थाप सिनार्म सिना

अयर अरकाचनविद्यान्यकारिता नरकरकाचनकानारकरका जनमालिनी क्राक्रियलको मासाकर विम महूनियी मशीकर्मनाशाकरिष्या हर करप्राणाकरक जाकरकाकरकाकर करणाचल प्राचकरका चलारि णीं ए करकाचलप्रत्री चकरका चलते विशी करकाचलगेठ खायरकाचलर सा हो २५ करकाचलसमा ि न्याकरकाचलकाित्राभिटर करामलकांस्थाचकरामलकासे हिंदा करामलके तर्ज्याकरामलकतार णी ९१ कर्पभननक्रियं वर्गमलक्लोचनी कर्गमलक्माताचे करामलक्सेविनी ध्र करामलक्ष ह्यया नएमंत्र वरियनी येजने जा के जगतिः के जस्या के जधाविती एउ के जमाला विवक्री के जस्या -चक्रेजकी बंजजातिय जमितः बंजमोर्पएपएण ९७ वज्रमहत्तमध्यस्या वज्ञाभर्गाम् वितो वज्रसन्मा निरताके नेत्रपति परायणा ९५ के नएशि समादाए के नारएप निनासिनी कर्न कक्षमध्यस्या कर्न दश नासिनी करे नसूत्वासूर्ण सामादाण नासिनी करिन बालाका स्वान परायणा ५० करना एन

त्मात्वीचेद्रताश्याद्यात्मित्रा १६ दलाह्याद्यादाश्यदादादादादात्मादादादा जित्रहित्ती >> बलामपीकलाधाराकलायाराकलागमा बलाधाराकमितनोंकपाराकरणावरा १९ पना रवर्णसर्वे द्वाक्रिका विभावन विकारको दिश्णितानकारको दिभ्यणा ७२ वक्षारवर्षाहरया नभारम नुम सिता व बकारवरी मुख्या कर्यो स्विता ए बक्ककवरी स्वाककवर्रा परा वर्ग करवी सस्य जरताक मत्नाक के एनिता दश कमला कर हाया कम लालहा दहू पर्ध के कमलाक रिति स्थायम जावर पारहीं देश कमला कर मध्य स्था कम जा कर तो खिता वर्षकार परिलो चाक छोका र पर्ध पर्ध है के वेकार पूर्व तस्याक्ष्येकार्षश्राक्षभ् क्रमलाक्षीयमलं जाक्षमलाक्ष्य र जिता ८७ क्रमलाक्ष्य रो घुक्ती केका र कर्वे स्य बर्ताराकरिक्नाकर राष्ट्रामाक लार्रा वा प्राप्त में अने हे सामा अवस्ता कर निता बर नी या वा पर

प्रशिक्षी विवेदस्थितावं द्वींवं वं केविविहारिश ट बजालायजालादां मानसायजाला खणा अपालक जनलसमाबज्ञालेराप्रशतिता । क्रजालार्गावमध्यायाक्रजानन्दर्पिणी क्रजालिप्रयसेनुषाक्रजा लित्रयते। विक्री १० द्रपालमालाभर्गा द्रपालपर भरवाग द्रपालचर भरवास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र गालको हिनिलया बपाज र्गा था रिएंगि कपालिंगि रिसंस्थाना कपालचल वासिनी १२ कपालपान संत ष्ठो कपालाक्येपराप एग कपालाक्ये विपालाक्या समालाक्ये वरो चता वर्षे कपाल चर्ने त्रपाच कपाल चन्ने ह पगा कहलीक हली रूपा कहली वनवा सिनी १४ कहली प्रष्य सिन्नी ता कहली हुए सिन्नी कहली हो मस्तुष्ठी सर्भीर लेंने द्या १ भें नर्भी गर्भ मध्यस्या नर्भी वन सुन्दरी करम्बु उद्यानित या नर्म्य वनमध्य गा १६ यहम्यद्रश्रमामोहा वहम्बन्नता विश्वी अहम्बन्धांत स्मान्य हामका वहम्बन्धाः वहम्बन्धाः वहम्बन्धाः वहम्बन्धाः वहम् लप्रशामान्यतालिप्रयागतिः कर्वालिप्याकंता कर्वालप्रहारियी एर करवालम्यीकृमीकरवाल ब्रियाकरी वर्षभाज्यभाक्षक्षणक्षंध्याशिमध्यगा ८९ क्षेत्र्यमार्संतुष्टाक्षंथासन्धारिएरि १०० क्षेत्र्य हमध्यस्याकवधवरैं वे सिनी कवंधकात्निकरणी कवंधशशिक्षवर्णा १ कवंधमाला नमहाकवंधरेहवा सिनी अवयासनमात्माचकपालमात्यारिणी य क्यालमालासध्यस्याकपालप्रतती विणी सपालश पहेतुष्ठा कपालिशपूर्धियो। ३ कपालिशप्वरहाक्षणालकन्तलियां कपालमालानपराकपालन्य ताविंगी ४ कपालसिद्धिसंतुष्ठावयां सभोजनो यता वपालवतसंस्थाना कपालक मतालया ५ कालि त्वामत्साराचक्वित्वामतसाग्य कवित्वासिहिसं हलाकवित्वाहानकारिंगी ६ विष्ठ ज्याकविग ति: कविद्पाकविष्ठिया क्रिया क्रिया नार्द्ध पाक चित्रं अत्वती प्रिता के विसानस संस्पाना कविवां छा सविकान र १ कि

युविष्युर्ध्यस्थानाक्षवयाचना स्वराग उ

२७ कल्रीकामोहरताकुल्रशचनवासिनी कल्र्रीवन घरशा कल्क्री बेन्ध्रार्णी २८ कल्र्रीश किनिलया कल्क श्वेरम्थ्यमा काल्राबंडमं स्वाताकाल्याबंडमञ्चना २९ कल्य्ये बंद्धी संत्रशाक्तराजीवधारिए कल्य्ये परमामोहाकलारीजावन समा २० बल्ही जातिभाव स्थाब स्त्री गंध चुम्चना बस्तरागंध संशीभिवरा जितलपालकः ३१ वस्तराम्ह्नान्तस्योबस्तरामद्हर्षद्दा वस्तरीकाविनानासावस्तरागरमध्यमा ३२ प्रस्त्रीत्यर्भक्षा ए। कत्तरी निन्दकान्तवा कत्त्र्यो मोहरसिका कत्त्र्री की उनोधता ३३ कत्त्री राजनि तिविह्ता कत्तरीयस्भाषारिकत्तरी स्थानवासिनी ३५ कहरपात्रकाचनहानम् करात्मस् स् हर मानहे त्यां व्यावस्त्रहें के किया है। के माला कर्य के ब्रोध कर में ब्राह्म या विश्व में मिला कर नाम स्रोति एम म्बद्रसभोगिनी अहम्बदाननान्तस्या अहम्बाचलवा सिनी १९ अछ्या अछ्या अछ्या सङ्गासन संस्थिता अर्गाष्ट्र एक्एंनासासासासीशिकालभेरनी १८ कालियाना बलहरा बलहा सलहातुए कर्एं प्रश्नीकर्ण को निस्थिनी कर ग्रांसन्दरा २० वर्षाविशाचिनी वर्ण केनिराक विकाश है। वर्षि के छ्य हुणाला कविका सहिष्णी २१ कत्त्र रामगसंस्थानावसरामगर्विणी बस्तरामगसंतोषाकसरामगर्भधाग २२ बत्तरीरसनीलांगीक स्त्रीगंधनो विना काल्रीयज्ञकत्राणाकस्त्रीयज्ञकिष्या यहे काल्रीयेमसंनुष्टाकस्त्रीयेमधारिणिक स्तरिष्ठनकानन् अस्तरिगंधन् विणी २४ कस्तरिमालिका द्वायक्तिरी इजनिया अस्तरितिलका नेश्वतर्रीतिलक्षिया २५ केल्द्रीहीमसंतुष्ठाकुल्द्रीतयीं नी घता कल्द्रीया र्जने युक्ताकृत्त रिचेश्रहिता यह अस्तुरी श्रम्या संस्कृति के स्ति राज्य के सार्व के सम्बद्ध के समान के सम

बुन्री कमरासनसंस्थाकमरीकर्मतत्वरा ४० कर्णाकरकानाचकर्णाकरवन्तित क्रो एकरमासाचक होर्क चथारिएी। ४२ कपिस्नीक ब्रहिनीक हिनीक कम्बएग कनभोरः कहिनहा कर्भा कर्मा ल्या ४ ड्र ा-स करभाषामयोकस्याकस्य नाकस्य दायिनी कमलस्याकसोमाला दमलास्याक (त्रभा) ५० कडुप्पिनीक है मुन वतीक्षणाकणार्श्विताक्रजा कचार्चिताकचतनुः कचसुन्दरधारिशी पृत् करोर्क्चसंलग्ना कटिस त्रविएतिता क्रांभक्षां प्रवास हाकाणाकन्द्रगतिङ क्रिलेः प्रकालेङ विद्यांकिल स्वीकि विनायक स जिता करी दशानियन्त्रीचक श्रिलविवर र्जिता पर कत्रीचक त्रिका भवा बरणी कर्ण शत्र हा बर्गाशी कर्नहाकल माज्ञानुभूषिता ५७ कररोभी प्रकारिकाकर्गां वाकलानिधिः कलदाकलना भाराकरिका कर्याकरा ५५ केल्सिहाक्रक्याश्रीकर्वाश्रीक्रक्राक्रक्रीक्रक्षाक्रक्ष्यकान्वक्रम्यकान्वक्रम्यकान्वक्रम्यकान्वक्र निस्मिनिष्ट्रतेन दिः ४ नायकार्यनार्व

वराकहनामयरायरा। ३६ कहवारायरारताकहदेवीकहेश्वरी कहहेतुःकहानन्दाकहनादयरायरा। ३८ कहमानोक्तान्तस्याकहमें जा कहिएवए अहगोत्रोकहारां खाकहथ्यानपरायेणा ३९ कंहतन्त्राकहरूहा क हन्द्रीवर्यणा कहिंचाराबहग्तिः कहना इवकारिसी ७० कहारस्वाक्र्गतिः कहरा कि परायसा क हराज्य (तायुम्मेसा शिएगोक मेर्य कुन्हरी था कर्या विचाक मी गति: कर्म तेत्र परायणा कर्मा माना कर्मी गात्राक्रमशर्मिषण्यण ४२ कुम्बरेखानाशक श्रीकर्भरेखा विनोहिनी अर्सरेखा मेहोकारी कर्मकीर्ति परायणा ७३ अर्मविचा सर्म्यसारा सर्मधा राज्यकर्मभ्दः सर्म सारा सर्मसी न सम्में नी न सहिर् । ५७ इ र्मपात्रीक्रमीताराक्रमें छिन्नाचकर्म हा वर्भचंत्रालिनाकर्भव हमाताचकर्मिन् : ४५ वर्मकाएउरता 

अरिनाथिषयोगेषा सथानक प्रतिष्ठिता १६ कमनीयाक मनीका कमनीयविभ्रव ए। कमनीयसम्जस्या क्रमनायात्रतिषा १७ क्रमनायाउँ एगा राध्याकपिलाकपिलेखरी कपिला राध्य हस्याकपिला वर्श रा स यिनी १९ अपर्रलहीस्पर्पाचकएर्स्नहोंबर्दपरा अपर्रलङ्गोसिहिरात्रीकस्वतीसद्विणी र्वा अहिं मंत्रवर्णा जवस्त्री प्रस्कता क्वर्गाचक्षपारस्या क्यारी द्वार नक्षमा ॐ कंकालीच मृपा क्र वीच्वंकालिपमाविण कंकालभैरवाएध्याकंकालमानसिष्येता ११ कंकालमाह्नरताकंकाहु लमोहरायिनी बलमद्भीकलषरायलं वाति विनाशिनी अ यति हमायला हाना वरपप्र कश्यपार्श्विता वश्यपावश्यपाग्ध्यावलिश्णांकलेवरा १३ वलेवराका रिक्चा कहवर्गाकलाई तिमको करालभैरवाराध्याक्सालभेरवश्यभेरभेशकार्यक्ष्मलेक्स्ना स्थ्याक्ष्मक्षीश्वर्यस् कमारानकरामन्त्र समारानगरहेष्टरा कमकारानसंतुष्टा कमारान विताखिली ५७ वर्ष लाकश्नरहना कमिताकसितास्त्र ना करमालान क्येनाकरमाला वतिष्विता ५९ करमालाशयानन्दाकरमाला समा गमा बर्मालासिक्सिनी करमालाकर्षिया ५ ए कर्षियाकलरता करहा नव एयरेंग करेनन्। कलि गतिः कलिश्रमायुलिप्रसः ६० यसिनाद् निनार्स्यायुलिनाद्वरप्रदा यसिनार्समानस्यायुरीलाच कहोतहा १९ केर्लेहींगेह संस्थाचकहोत्नवरहायिनी कहोतकविताधाए कहोतकसिमानिता ६२ कहोलमान बाराध्या कहोत्वाव्यकारिएंगि कहोलेगे हमध्य स्थात होत्वयुरकारिएंगे ६३ कर्तस्याक र्तमयी कर्नमाताच करित क नीया कर्नका एथ्या क नी क क्या कर्नाया ने द नित्रया कर्नका नर्तोखिता बनानवर्षाबङ्घा प्रधार्णवर्षायुक्ति। ६५ द्वारम्यावरिम्नातः करियमप्राप्त

क्रम ना अवित्यका का म नी अंड चुम्बना का मनी यो ग संतु हा का मिनी यो गर्भागवरि धारियो कि कि नामिना प्रवासिना प्रवासिका प्रवासिना प्रवास 90 रा। कामिनीकुरासंत्रानीकामिनीकुउमध्या। २५ कामिनीमानसाएध्योकामिनीमानतीयिवीका मिनीमानसंचाराकातिकाकासका ८६ कामाचकामहेवीचकामेशीकामसंभवी कामभावाका क्रास मरतायामात्रीकाममञ्जूरी २० काममाजीवरियाताकामहेव जियानरा काममालीकामकला की सीकामकलाभिरा प्रकालीकामकलाकालीकालानलसम्ब्रभा कुलान्तरहनाकानाकानार्षि णभा विसी र कालप्रज्याकालर ताकाल मालाच का भिनी कालवीर कालविहा च काल रा ८० प्रातान्त्रन्समाकालीकितिन्द्रिनवासिनी क्रातऋहिः वालयहिः कालाग्रहि विमीयनी  क्रव इिजयमालात्माकरवीर्षस्त्रहा करवीरियाषाणाकरवीर्ष्व प्रजिता ७६ कर्लाकार्यसमाकार्यकर्तिकार त्र प्रजिता का विवारनी स्थिताकार्ध्या कर्षु मात्र सुवर्णा है। ७० केल शाक्त गाए ध्या के वा पाक दिगा नहा कपिलाकलकेशचकलिक स्य लता मता ३५ कल्य लता कल्य माता कल्य कालाच प्रस्पे दे दे रिमोर हिचायर एमो ह्धारिएमे १९ अर्प्यामाला अर्था अर्थ्य वास इति रा अर्थ्य माला ने रा अर्थ र्णवमध्यमारः अर्थरतच्येणर्ताकप्रीतं वर्धारिणी अपरेश्वरतं द्रज्याद् परेश्वरत्विणी द्र अइः अपिध्वमा एध्या बला पण्डा द्विएक बला पण्डा द्विएक वापे अध्य प्रतिमा १२ असचा अ सचाएप्या अर्थ क्रूम्बी कए लता कर्यकार विति र्यन्त्रा साली का चियाक्रतः ५० सामिनाकामिनी स्च्यानर पा नी प्रध्येष्व विक्रिका ना जिल्ला के विक्रिका के विक्रिक के विक्

कोचर्याकोच्यसिः कंश्यपात्रप्रभोजिनी २ संश्यध्वनिभयाकामसुन्ररीकामचुन्चना काशपुन्यप्रतीकाशा कामद्रमसमागमा ३ कामप्रव्याकामभू शिः काम प्रजाचकामहा कामहेहाकामगेहाकामग्रजपराय एग ४ कामध्य जसमार् कामध्य जसमास्थिता कोश्प्षीकश्यमा एथ्या कश्य पान न्द्राविनी भक्ताल की जान के का का कि की जान है ब का महें ब का महें व र मार्थ हा ६ कर्मि ए। कर्मि ए। कार्यक्रमकार्मणकारिएी। कर्म एविजाहनकनीका मिनी कार एक्पा श्रवामताच्यातिगाका लिंगमर्नो घता बालागुर्विभ्रवाद्वायालागुर्विभ्रतिहा द बालागुर्युगेथाच्यालागुर्वत 

कीवानाचेवकीवीनाहरूवायनमः स्त्रता काम्याकाम्यगतिः प्रान्यति हरात्रीकृति हिसः १३ कामाशाकाम चिर ह्याचकामचापविमाहिनी कामदेवकलाएमाकामदेवकला एव पासराचीकाम रात्रीकाला एचलचा सिनी रालस्याकालगतिः कामयोगपरायणा ए५ कामसमईनर्ताकामगेहाविकादिानी पातभेदवभावी चकालभैरवंशामिनी रर बालभैरवयागस्यातालभैरवभोगरा परमधेनकामरोग्धिकाममाताच भानिया ५० भाषुकाकामुकाएध्या कामुकानस्वाईनी कार्नियानाकार्तिकेया सिनेतार फार्याफारेणहाकार्याकारिणीकार्णान्तरा कानिगम्याकानिमयीकान्याकात्मायनीतिका ८९ कोमसारा चक्रिमाराकारमाराचारतत्वरा कामस्पाचाररताकामस्पिचिवेवहा २०० कामस्पाकामधिसाकामस् 

कुलच्यामणिषिया २० कुलार ज्या कुला एथ्या कुल स्माप एप एग कुल भूषा तथा कुलि कुर्रागणा से वि है 92 नी २९ कुले प्रवास्त्र स्ताक् ल प्रवास्त्र वाला कुले बह्मा कुला एध्या कुल कुराउस न इसी २२ कुल हो एउसमुलासा कुएउ प्रव्यव एव एए। कुएउ प्रव्यव हस्ता कुएउगो लोभ्र्वा मिका २३ कुएउगोली भ्र वाथरी एक्एमोलमपीक्रःक्एमोलिखवाणाकुँरमोलजवजिता २६ क्रारमोलमनोल्नसादुएरमो लवरत्ररा कुलहेवरतोत्रद्वाकुलसिद्धिकरापरा २५ कुलकुएउसमाकाराकुलकुएउसमानभरः अ एकिहि: कुए अरिह: कुमारी हजनो घता २६ कुमोरी हजकत्रा एत कुमारी प्रजकातया कुमारी काल संमुश्वकुमारा व्रमको त्विका २० कुमारा ब्रतसं नुष्टा कुमारी स्थानियो कुमारीभो जनः त्रीताकु लाश्रीविष्ठार्शे यर देनास्मानानुल हानुस्माने किन्द्रे से एक री जुल लिंगा दुरा त न्या देन राजा त

रापानरतातथाकारम्बरीसूबा १९ कामवैधाचकामेशीकामएनत्र एनिता कामराजेशवरिवधाका मकी नुबक्षेष्ठरा १२ काथो जनाका खिहा को व्या का चनका रिएए के चना दि प्रमाका एका चना दि प्रदानत १३ कामकी तिः कामकेशी का निकाका नाए श्रया काम भेरी च कार्ति नाशा नी का में भी का रहे काल मेशी निर्नाष्ट्री नाका स्टिशि का मस्याका संदिश्चः का व्यवस्था से १५ करहे तो का रण वएका मारी इज्ज्ञो छता का व्यक्ति क्युर क्ष्मा का कु कु मा अरणा व्यक्ति १६ कालच का का ता ता ता स्थान म्मनीभवा देनेमध्यादे नेप्रधादेने प्रधादिना का देनमाता दुनाएधा दुरार्वर पारिएत 

गरी ३२ क्र्युम्भाक्रवीनाक्रवनापपराषणा क्रिनीक्रमसंस्थानाक्रवीकुराउपरागतिः३८ 53 पूर्ववीजालां और शाक्ष्वमान के पिता अलब्दा गता क्रमी व्रमी व तिना सिनी ४० उल विनुक्त क्षिना कुल शासपा वर्णा कुल विनुम शिष्ठ व्याक क्षेत्र महम् वा सिनी ४९ कुन्म ईन् संग्रहा कुच नापप्रायणा कुच स्पर्शन संग्रहा कुचालिंग नत्सरा ४२ कुग तिझी कुचे राची कुचभः कुलनाथिका दुर्गीयनाकुचधएं कुर्गिताक स्हिनका ४३ कुगेराक हएभासाकु गोपाकुचरारिका क्रानिः विरातिनाक्षिन्ना किरणाकिन्त्रीष्ट्रिया ४४ क्रीकारीक्रीनपा शताओं है स्त्री मंत्र देप गी विमिरित दशापा गी किशो रा वा विमिरित देश कि अपने वा विश्व वा विभाग कि वा विमिरित देश कि अपने वा विभाग कि वा विमिरित देश कि व 135) कुतक्षेश्व २९ कुनीवकुलकानाचकुलमार्गप्रायएण कुल्लाचकुरकुत्साचकुल्लकाकुल्लकामहा ३० कुलिशोगी अञ्जिका चकु जिकान द्याई नी कुलीना कुन्तरगतिः कुन्तरे घर गमिनी ३९ कुलेनाती कुलवतातथेव कुल राविका कुल योगी अचिर कुए रा दे ए विस् रा रू कु मान द संतो था कु कुमाण्ववासिनी कंकुमाक्ष्मप्राताकुल्भः कुलपुन्री ३६ कुन्हर्नोक्ष्महिनीकुरालाकुल रालया कुलरालापमध्यस्वाकुलरासंग्रतोषिता ३४ कुलराचुम्बनोष्ट्रेकाकुशाच्हीकुलाएीना कुलाएविचार्वताकुएउलाकुतिः ३५ कुमितिश्रकुलभ्रेष्टाकुलच्य ४ १एपणा कूरस्पाकू र्ष्टिश्वयुन्तलार्युन्तलार्यतिः २६ उराजायतिर्याचकूर्चवीनधरच्युः यूर्केर्येय्राद्यती त्र्रेत्र्यं श्रूषण्यण्यश्चित्रक्ष्यं स्वाद्यातिलाया अस्ति प्रतिष्ठवा अस्तिनी अस्ति स्वाद्याती अस्ति स्वाद्याती

केरिकालानल ज्वालाकोरिमार्नएडियही सतिकासस्मवणीचससासताकियातेला १० स्टेडि 88 शामीन्तत्रत्याचनः इट्लाहात्वद्विणी नीत्रीह्यूट्मन्वणीनीत्रोत्रहेद्रद्वमः खधा पर जी जी ही होतथाई है ऋर्खाहा मंत्र ६ लिए हिस एों का लिसे चेति हर्य यो जी नि चे हिर् चितंशिसाद्यात्यासुन्वेदः प्रातियोगतः वर्दानप्सङ्गे नरहस्त्रमं वृद्धितं ११ गोपनी यंसरोभेत्या पढनी यंपरात्यरं पातः मध्यान्कोले च संध्यापाम इराजके ६२ यूनाकाले न णोते चणहनी या कि ब्रोह्मका अपने मार्थ का धीया का जी हुने हुने के विकास के परिन्ता था है ये का लिए के लिए के परिन्ता था है ये का लिए के परिन्ता था है ये का लिए के लिए

की की के का प्राची के लिए की की जिला किया है। अंक्रीं मं जह विणी को की के के स्वर्पाच का फर्मं करहिष्णी ४० केन की भवणानन्दा केन की अर्एणिक्वना केकएकेशिनीकेशी केशी स्र न तत्यरा ४२ केशस्पा केश मता के के विकेशिनीत्था के र्वाकेर्वास्त्राक्षेत्रा एकेन्द्विणा ४८ केश्वाएध्यह्दया केश्वा शतमानसा क्रिय निर्ना शिनी केच के बीजनमता विणी ५० कीश लाशीशला भी चे भीशा चका मलातणा को लाप रिन वासी चकालासुर्विनाशिनी पर कोरद्वाकारर्ताकाधिना कोकन्तिया विकाचका किताको दिः की रिमंज्ञवराष्या भर को सनन्तमंत्रैष्ता के द्वा के रताचा र निष्णा के रते के कि च्यिता भेर बेहाएश्रमसंस्थाचकहारेश्वर हे जितो को धन्त्रणात्रीश्रमाताचकी शिकी ५७ क्रीरएडं धारितिकी चाकाशासामामामामामाने क्रिक्विकी किकास भार की लिका नन वासिनी

तितेरि भहोषवारेरतेष्त्र नैवेधैः बद्रसान्वितैः अर् इजियानामहाकालीमहाकालेजलातिता विद्याराजी कुल्न को च जस्वात्तो त्रं पटे छिते १३ कालिभ करत्वे कचितः सिंहरित स्वितः ताम्बर 500 लक्षितम् रेवा छत्रके को दिमाञ्चरः शवयोति स्थिता वीरः श्राममस्रता नितः श्रूना लये चिनु भी हे 9 व्याकी एरियातके अभ मना वेष्य है ए जे याकाती रश्तमा मुनार ऐ ख व्ये हमला सा स्ति होश्रीकालिकाष्ट्रिका भ्र कवित्वेतात्तात्तात्यात्यः सोन्द्र्यम्-र्गसमः वसोई।एसमः काम्भ्रतीश्र कि विधारियया १९ ब्रस्मास्त्रपंब इर्ह्स हो ले। सिव न वास्त्रवेत शने हती कार्य कर्ता भवे छि वसमः क ली अर हिविदिन चंड्य तीच दिवाए निविषणी में महारेबसमी वी गी ने लोबम से भ के: त एत ०९ गाने चतुम्बरः साक्षाहालेकार्वासालोल बेन ग्रमांक्ष्य संबन्धानां मंगियां मधियः दती २० श्राय ग

विश्वर्गितिश्रावयेद्वि वाचकंतोषयेद्वाविसम्योत्कालिकातनः ९४ तहेलम्बासितसम्बा यः काष्ट्रिन्मान्यः पहेत् सर्वेषुः रतिविनिर्मेतः स्त्रेतोक्षिनवीनिवः ६५ मृतवध्याकारायधा क्रायांच्याच्यंध्यका वेष्यवंध्याभ्रत्ववंध्याभ्रश्यायात्रात्रवनम् १९ सर्वतिहित्रहा नार्सान्त्रवि चिर्नाविनं पंडितेदेकीतियतं लभते नामा लंश्यः १७ युधक्रामपराच्ये समातिधात्वा स्तवनपत् ततकामः बरेह्यत्यामंत्रीभयतिनीम्यया ६८ योनिपुष्येः तिगपुष्येः उराउगोली भ्वेरिय संयोगासतप्रचेष्यरमस्त्रात्रस्त्रक्षेः १९ कातीप्रचेः वादतायेः यातिसातन विन्द् भिः बात्तरीयुं क्रमेहेवीन खकातागुरं कामात् ७० ऋष्टगंधेः श्वरीचेः नयामारं क संयतेः रत्नचंदनत्तर्थेः क्रिक्सम्बनासादिक्सम्बेद्धः १९६८त् ध्राप्ताः स्वीतेः शोधितेः शोधितेः शो

मिंशिक्ष की प्रयोग्न पार्श कि दिस्ति में प्रवेश करे की मीनित्य निवा की माने दिस दे प्रयोग हो या प्रवास की मिना कार्ति संवित्य प्रमेश की नाम माने शाभ्यअष्ट्रमंसर्विद्याधियोभवेत् २० ग्रत्यागारे शिवार राषे शिवहेवा स्वयेत्रथा भ्रत्यदेशेतरा गेच्यं गागर्भे वतुष्य षे ११ रम याने वर्ष तेपा ने एक लिंगे या वे मुखे यो में अब हाता गरे वे श्या गरे तथा दे यु दि ने गर हमध्ये वा 38 क इलीम एउ वेसदा पढेला इलाना खोलो जेल बार्क ला अर्थ दे अर्ए पेश्न सर्वे हा एवं शक्ति समामें बालि संचित्यप्रमपेनातानामसंहस्त्रदं रेथे यंचान-रमयो भत्वा पिततासित तास्त्र मनवेशोर्वा वासामेपनी शायनस्थितः रण जस्ताकाक्षांपढेन्नोत्रं खेचरिसिद्धिभाग्भवेत् चिक्रं योगमासाध्यक्षेत्रं त्यारणमे वच् ८६ मखाश्रीरसिणाकालीशिक्षिणतशतंलभेत् स्तीस्टश्रम् अविकाविकातिकोचिनयनवि ५७ अली क्यन्दिस्वासंगरः शक्तियशेषतः मन्त्राश्रीहिस्णकासीयोनिखकरगां चर्ते वर्षहेनाकासहम यः शिचार्यधिनोभवेत् रामोर्लेषुमधुक्कालाकालीनिएकुला १५५ ह्थान्यानो मविसा समाग्रेणेता ए

च्यानुभ्युरिराचनएषितनाशनः वर्षवारश्यान्भवात्मर्वस्त्रात्महेखि ण ब्रह्मारगोते देवेशिनतत्वरु रम्भंधित मर्वहस्तगतं भूषान्ता नकाषां विचार्ता हर कुलंबच्य वतद्शुतन काली विचित्तच विधा एजी चतंत्रमः पहेन्नामसहस्रकं द्रमनोएजमधीसिहिलास्य हले तर्भवेते प्रशिक्षमिनियमें चुन परमेश्वरि द् हलाह लेखायोग खत्या ज्ञाला येपहेत् यो निवार्य ज्ञे वेत्ती जे कु वे ए हिंध को भयेन रथ कुलागोनोभ्रवगञ्च प्रक्षां लोहो मधिनिक् वित्यस्मोमहेशानिविधिरे वाहिमार्जवेन रूर् तर् णिचंचर्याएमा पुन्हरायामग विता समानाषप्रपत्नेनसंशोध्यन्यासयोगतः देश्यस्त्रमेचेसंस्या व्यवधीविकसिताचरेत् म्लचकंतुस्माव्यर्थाव (णसंयतं ६८ संयुक्तप्रविशानि सवस्त्रानं न महश्वरी महामुक्तमहस्यानिज्ञानिज्ञानिज्ञानिक्षेत्रम्य निवं मेन्य चंप्यतन्तः संयो

हिहिमेशभनेः यतेः शोणितेसा स्थिमासै जनारणेः उत्थवायसः १० कार्स्य एमध्मधैः १० परिश्वता सर्वेः योनिशालन नारै पत्र योनि लिंगा सते नच ११ खना ते सुमे हत्य जपाने तर्षये चिख्या दियसामा यना भी गुस्तलानलास्वरातितः १२ शत्तालापे परेन्तोत्रं मालीस्वोदिनत्रयात रक्षिणकोतिकातस्य गेरेतिहित नान्यथा १३ वेश्यातनाग्हेगत्वातसाण्यावनतत्परः तसायानी मुखदत्वातद्रसंवितिह्नवेन १४ तहनीना मसाहस्त्रंपहे क्तिपएषण: कालिकार्श्वनेतस्य भवत्व वित्रपामतः १५ न्द्रपानीएहे गत्वा मका राष्ट्र कान्वितः इस्मम् चेसंस्थाप्यशान्यासय । वर्णः १६ यात्राणासाधने छता दिणं धोनासमाचरेत च ज्ञतन्त्रतीं मान्यत्र तावरणायनेत् १० शतंभाते शतं भे शतं प्रिंदरमंडले शतस्य उप देहेशतेना भोमहेर्चिरिश्र शतंग्रीक्षेप्ताहेर्पानि उत्यापन्त्रात नथं नथेन्त्रमहेशानित्र नोपरिताति १८ शतावधा एव मिश्रासादनाजकत्याध्यित्वा तो दिः न

39

धयाः काल्एन्यामरुग्रमोवीररान्याविशेषतः ३०० चनुईश्यामधाष्ट्रम्यातंत्रमे व महेश्वरी बुहु सूर्तीन्द्रभन्ते षुओम्रयानिशामुखे १ नवम्यानगल्विनेत्रपासुलतिथोणिचे सुसन्तरक्षे सुवत्ने न वहेनामसहस्र र में रशानी अवेदा मुक्तिन रिवि दिभाग्येवत् पञ्चिमा सिमु खिलिंगं यव अत्यं परतनम् र तत्रित्याना वेत्तीत्रंसर्वकामा देशिक्वे भोमवारेनिकाक्षेच अमावाक्षा दिने मुभे ४ मास्म त व लिखा गर्य एने चणयसं देग्धवीनशोत्योतेच द्धिंसाचिगु होदनं ५ विलिद्त्वा जयन नत्व हो तरसद्खने देवगंधर् विद्याची : से वित्य ए पंहरी ६ जमे हे विश्वामा सेन तस्य चाशन संगति : स्मानवं भ वे इ जीना न का वा वि चारणा १ हलयातिसयाभत्याकाला जोतितिर जुषः ब्रलारी स्तुभये देव माहेशी मोहे वेत्सरणात् ४ ९ अन्म जारये न्यूनेस्टाके जन्म मनो न्यूनेस्टाक मानिस्टान । स्थान स्था अवर्षवेत्मताविचां दश पूर्वात्रिया मतः नक्षत्र विस्तृतिनी तांचमा दी तान्म ।।।। न

नामासिर्वनापारादिभिः विये चनुर्वेदाधिषो अत्वानिकातत्तां स्त्रियुर्वतः ३० चनुर्विध्चपो दिसंतस्प हत्ते गतस्त्र णात शिवावितंप्रातयः सर्वराश्रन्यमं उते ३१ कालीध्यात्वामेत्रचिनानी लताधुनमेवच सहस्रनामपाउन्त्र असे कालीना मझकीरिति ३२ तर्नस्य छत्यमे ताब दन्य रुख दि दुः वारसाधन संकर्मशिया एत्या व लिस्त्या ३३ 80 सिंह्रुतिलकारेवि वेश्याला पोनिर्नारं वेश्यागेहेनिशा चारे ए जी पर्ययनेत्या ३४ शकि र जायोनिरिष्टे खर्हितादिगम्बरः मनकेशीवीरवेधीनां सल इहिताननः ३५ कात्रीभक्तो मचे देविनान्यथासी भमापु यान् इम्धलाहियोनितेही संविद्यासव घू सितः १६ वेश्पानतासमायोगान्मा सान्य त्यन तास्वयं वेश्याच ऋसमायोगान्याताहरूमयः ख्ये ३७ वेश्यामध्यगतं गिरेयरानश्यामिसाधकं एवे वहानिसायातीतस्मा द्वरपाव एंगना र वेरपानमानामात्रामी देना निर्भात स्वाता सम्बद्धमा सुन्द्र स्वाता स्वाता स्वाता स्वाता स्वाता स्व

नो भवति आसमाने ए। सानि गिना समानीय दिनाका पा निकाशिव २० दनमाला जरे कर्या गरे धार्यान मुण्डना नेत्रपद्मेयोनिच्ये, श्रातिच्ये स्वयं असे यह सत्वानवे अहेशानिमें उपने प्रत्ने यह नवेत मंत्र स्वयं स्वयं वीरो मकार्व चुकान्वितः १२ अन्वामा लिंगप्रजावे हत्या सम्बंध वे वहत् अत्यासा हम्ये नत्र ह्यासंस् हेत् अ अव्योगोनीमपंदत्वापनः पूर्ववद्याचरेत् अवधानसहस्रेष्ठशक्तियातपातेष्वच् १४ रे नाभवित्रहेवे खिमासप्चक्योगतः यव्नीशिकिमानीयगानशिकपएयराहः ३५ कुलानारम्मे एवितस्यायोजितिका शयत तत्रिकाष्ट्रस्याचनपेन्ना मसहस्रके २६ नवषाले वत्रिये लाच्यपत्न नवे पहेत् महाकविपरे भ्यात् मात्रकार्याविचारणा २० कामात्ताशकिमानीययामीत्रमूलचक्रकं विलिख्यपरमेशोनित त्रमंत्रिति े व २८ निलह माने हे विसर्वेशा स्त्रार्थता वित्त अञ्चलान्य पिशा स्त्रा शिव हिंदी त्या हये थुव २५ विनाम्याहेर्वि

मध्यए त्रीहो मंद्रा वाश्मशानके ४९ परे नामसहस्त्रेयः ए ध्वाशाकर्षतं भवेत पृष्ययक्ते भगे हे विसंयोगाने द तत्यरः ५० पुन्ति हुर्मासाध्यसम्बेनचा छित्र चितावक्ते मध्य एत्रीवी प्यमत्सा प्यमतः ५१ कालि है 54 द्रीह्जयेन ने परे नामसहस्रकं राषीशायर्ष एवं वर्षा ना ने वर्षा विचार एते पर वर्ती वनमासाध्यत् माज्ञज्ञेननरः मध्यत्याः व्यवदेनासे व्यमान स्मरोपमा परे श्रीमधुमती स्वतान तथा स्यावर जगमा नर्वणितिसम्बार्य दः दः खाहां सम्बर्ग ५४ वेलो साद्विणि विद्या तस्प हस्ते सर्व भूवेन नेशे परिचर लानिहेमस्त्री शेलभ्रहहान् प्प्भावर्षपत्यं वृतिधिं सुमेरोपिहिंगतितः असम्या निर्वत्त्रतिहर्गेम्प्रिक लाहित पर बताता ख्रिपराची नारहस्य वि दिवीमिय एती चरायय स्पेषासत्यं सत्त्र मानिशात ५० 

उर कुमारी एजयेम्दला नपा ने देव बस्त्रिये पढेनामसहस्र्यः काता दर्शनभाग्ने वेत ४० अत्मा ए पाकुमारी नु वेश्पाकुलसमुभ्दवी बस्त्रहेमारिभिलीब्य जस्तालोजपहे च्छिचे ४१ जैतीस बिन योभ्र्या दमाचन पर्श तः यघ इतं कु मार्थित तहन न्त प्रतं समैत् ४२ कु मारा प्रजनप्रतं मया वक्तं न पायते चाप ह्या इदित कि चित् हा म्यतामयमञ्जूतिः ५३ एकाचेन्द्रजिताचालाञ्चलो सद्जितभवेत कुमार्थाञ्चरात्रपञ्चेसर्वमेतच्चएच एक ५७ शिलमानापतामानेन्यासनालं वित्यसेन स्वनामभागे संस्था प्य यहेन्नाम सहस्रकं ४५ सर्वसि भारत दिश्चरोध्या नाजकार्या विचारणा शमशान्त्या भवेत्यस्यो गलितं चिद्धरंचरेत् ४६ दिगं वरसहस्रच सर्वप्रखंद्यम् नियत् खरीर्षे एपुतं सत्या यत्ये क्षत्र जयं हु जेत् ४० ह्र जोकत्या महाभत्या द्वामा पात्रो नर्रो अयेत न खंबेशास्त्रवीट्य चयासं आर्जी नागते ४२ स्त्र हेशादिवा वार्सी है ल में ने परस्तरं कुनवारे CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Salvagya Salvagya है बाववा स्थानिक समित्र

जवादीनानुकामध्या ६२ निदेशवर्तिनोभ्रत्वावर्तिनचे रकादयः भ्रमायाचं ६५ श्रम् चं ५ ग्रहणमे बच भ्रष्ट म्याप्रणिचन्द्रष्ट्रचे ६ स्पृष्टिक्ते था ६५ अष्टरिक्षुतथा चाष्ट्रीक्नोत्ये वमहेश्वरि आणामाये चरतं च चर्चर स्पृ प्राप्तिः ७० पाइका खड्ठवेतालयक्षर्गी ग्रचकार्यः तिलको ग्रचसारश्य च एक पानकं ११ सतत्त्रीचि नीसि द्विगिरकाचरसायनम् उड्डानसि द्वेशिषष्टि सिक्ष्यरत्वमं अ तस्यहत्ते भवेद्विनात्रकार्यादि । चारणा क्रेतीवार्डभीवस्त्रिवितानेवेष्टनेगहे ७३ भिनोचपूलके पीठेले स्प्रमाप्य स्तरः मध्य चन्त्रह थां गोतंपरितोनामले खने १४ तमार्एगान्महेशानिजेलीयाविनयाभवेत एकाहिशतसाहस्यानि जित्य चर्एगितरे ०५ प्रोनैयानिच मुखंस्व ग्रह्मितपार्वति एको हिशतसं र्र्यक्षिका ना भय निश्रवं

**% अत्यां स्थाप्य वलेनामसाहस्रकंप हेत् शेकः अस्थि महेशानिसर्वापनिनिवारणं ७० भूतवेत ग्र** CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

इताहात्ता मंत्रईरितः अञ्जिष्मारिकाना च येलो समादशी भवेत पर सर्ववरति हेव विनिकाल राष्ट्र अविः श्रुभः त्रिवर्षपाउतो रे विलभे जो गवतो कलो ६० महम्बालन दशापिया प्रमातीप च तसार् शंनमाजेणचिरंजीबीनरेभवेन शांमतमंजीबिनी खुद्धा मतम्यापयह्यं स्वाहानोमन् एत्यातस त्रसिक्षाभवेत्तत् ६२ १९ ही स्वत्रवाएरा काली त्व व्रेथण वोक्रेततः भनुकस्पान् के हे हिनी स्वाहानी मनुर्मतः १३ त्वप्रसिद्याचनुर्विधान स्पत्वद्वसहा स्थिता चतुर्विध्यपारेन चनुर्वेदा योगरः १४ तह ऋजलसंपोगान्नरः याव्ययनीतिच तस्पयांक्षेषरिचर्यान्यति भवतिभारतिः ६५ तस्तरेतुकरं द्वा वहे वाणीमितिधुवं ताध्योवाछ्यानुर्वम् तनथैयभविष्यति १६ ब्रह्माउगोनवेयाचयापाचिनागितले समसासिक्षेयोदे विक्रां अर्थित कार्ये कार्य कार्य

की विचार एए जी र सियो हा तिके चे तिसाहा यु ते जपे न्तरः महे नामसह संच जे ती ये मार्थे 39 भुवं दर सुप्रनाय प्रशतकं विचाएत्राभुमे दिने सुविनातायशाताय सनायातिए एए य उ सक्ताय ज्या व न न कि वर्ष के का का न न विषय के कि वर्ष व दे दे सहस्र की न माख्यं खयंकात्यात्रकाशितं वेष्णगयविभुक्षायशिवावतिर्तायच ८१ वेश्या एजनप्रताय कृषा रिष्ट्रनकायच दुर्गाभकायशैवायमहाकालवनापिने ८२ अद्वेतमावयकायकानाभक्तिपरावच गुर्द्विसमंत्राएंग महेशस्य चषा वीते ७३ अभे हेनस्मरेल्यंत्रे सिश्योनात्र संशयः यो मेत्रं भावये नमंत्री मिश्रवः सच्नाप सः ए७ सशाक्तीयेष्मवः सोत्र मएवश्र एशिश्यितः भ्योग्पायन हात्य सिहिः एथः अजापते एप वेश्वा ह्यी निंद्र जाया श्राह्म सित्ति हित्ति हित्ते स्थित स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान सि

हा दिनो राष्ट्रमां ब स्पर्समा वेताला नो भैरवानां स्कन्द्वेनायिकार्कान् ७८ नाशये हा एमात्रेण नात्रकार्याः । विचारणा अस्माभिः मुनितं रखा यह यस्त्राचितं यह अस्मास लापना देव धर्व यह निवारणा नवनीतं वा भिमंत्र्य श्रिएंगाइयानमे हेश्वरि ८० वंध्या पत्र बता सघ नात्र साम्पा विचार्एंग यहे वावा मेगा ही चो वो वो वा वा वा गाञ्चित्र य बहुप्त्रवतीनारी भुभगानायते ध्रवं बह्वोहिस्मगोगेच धोरवत्सर्वसिहिहा य करित्रवाही -विश्रिष्ट्येनाभिगोचरे केहिस्यानेशिखायांचधारयेत्वविष्ट्ये ८५ वलवान्कीर्निमान्धन्या ध क्रिक्रः साधकः श्रतिः वरुपत्रीर्थानां व्याजाना मधिपः पृत्वी यथ वर्षे जानवं रोपतः श्रीचर् शिरा कालिये की बाहाय नपेन्यं नमप्तेनामपादसं यथ अवस्थिएं चरे देवि नम खेच एक्रातान् वशासाण कामाहिई हैं हैं। ही च हिल र इसिन पर्विश्वनानि हर्ववस्मान्य छन् उर्वरपा छ। ये व श्रोबन्ना नथ

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

तथामार्नेहे विसहस्रमारने द्वती सहस्रमामा तं र मानिकावरमा प्रयात व नके विस्ति स्व ने हैं संधारवेत्वा तिका तनुः कात्य निविद्तं यघन छ संभक्षे व दि स्व हिंद धरे भत्या काती है है। स्थिता भवेत ने वे यं निह सान् हर् 22 मुहद्यानत्वंतिभैर्वाः र बोगिन्यश्रमहावीएरत्वपानोधतास्हा नासास्थिन्वर्वणोधताभ क्षयतिनसंश्रयः १० तस्मान्निन्देमनसाकर्मणावचसावित् अन्यव्याक् हतेयस्तुतस्य श्रीयाभविव्यति ११ अमिशविहीन् नांनिति ईनंचसर्तिः मंत्रक्षोभव्यवास्यान्क्षीणायुवाभवेषुवं १२ पत्रहाति व्यक्ति भवेडुवम् अमहीशायतोदिवअमाराज्यमयाष्ट्रपात् एकगारंपहदेविसर्वापतिविनाशनम् १३ दिवारेष पढेचाहिबाध्यविद्तिनित्यशः त्रिवार्त्रपढेचात्वागिशसमतात्रतेत् १४ चत्वरिषढेदैविचात्रविर्णा चिपाभवत् १५ वट्यार्मप्रहेद्विका अवस्था मायाभवत् सम्बद्धा प्रति के विकास निर्माण के व वंचगरंपढेदेविव चक्रीमाधिवाभवत अ१

रे९ वाग्यः ना घसरे आसः परं बोरे बहुं वदेत् बोर रूपे महा घोर मिला भी मपदं वदेत् ९७ भी बरात मुक्त बच्दान्ते हैं तेचायतंषिवा शिवंवित्रियगास्त्रचेहेरे प्रस्च मनुर्भयेन १२ एतस्पत्मर्गादैव इष्टानीचम लेस्र भ्रये । तीर्णाभवदेविनात्रकायी विचार्गा १८ रवलायपर्तत्राय परिनन्दापग्यच अष्टाय इष्टतत्वाय परवाहपर यच ४०० पिवाअकायर्छायपरहार्तायच अक्तोत्रंदर्शयदेविक्रावहत्याकरोत्सच १ पातिकान्द हृहयः कालिकाशकमानसः कालाभक्तोभयेत्ताहिधन्पस्वसर्वतु र दलौकाताकतोकालीक्तोका ली ने के चला क्र में काली क्र में काली काली कर में इस के विल्य प्रमार लागि कर भी चित्र पा प्रति नाष्त्राष्ट्रमयद्वितेनकातीवरप्रहा ४ वमलानासहस्रचपतिनाम्त्राप्तर्चयत् चक्रंसप्त्रमहेवारीकाति कावर्त माञ्जयात् ५ मंत्रक्षेत्र प्रमोरेचिकत्रशस्प्र मत्नेन च नाम्त्राष्ट्रते चितर्वश्रीभविनाशस्तर ६ CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

घुनपरोमराकालसमान्विता प्रत्यसम्बद्धतिशिवेतस्परेरेवसे भुवं २७ श्रीविद्याकातिकातीम् विश्वतिविद्य यपरेत् विश्वतिविद्यदेरिकामिश्वकार्तिता २८ श्रामश्रद्धायतोदेविराजाभवतिनिष्त्रतं २८ विचेति विसंगार्जिकरत्वविस्तर्यच महाराज्यमवाद्रोतिनात्रकार्याविचार्या ३० त्रमहासाविहा स्य फ्लमाष्ट्रयात् ऋमहाशायतोदे विशिव एवन चापरः अ ऋमहीशासमा प्रकः असी कि भाग जमशिक्षाविश्वस्यसिद्धिहानिपरेपरे ३२ अदेश्यन्यःवतालोके धन्यः जमप्रताहली तजाविधन्ति शिनामसाहस्वपाउवः ३३ स्थावियाविधीकातीस्तात्रमेतस्य एपहेन् सिद्विद्विदेवेषि नात्रक धाविचारणा ३४ अलोकासीमहाविधाकलोकासीन्सिइइ। अलोकासीचिसिइएक्सेनाकासीव परा अप कलोका की साधिक स्पर्शिमा पहिमचेता करनाका लिक वर्तास्पा नात्रका का विचारणा ३

23

रपहेदेवि रिगिशोभवति अवं नववारंपहेदेविनवनायसमोभवेत् १७ रशवारं नीर्तवे वीराशार्रवे चरेश्व विश्वाहारंकीर्तथेधः सर्वेष्वयं प्रयोभवेत् र वं चविंशतिवारे स्व सर्वचिनाविना शकं वचाशहार्माय णचभ्रतेश्वरोभवेत १९ शतवार्कीर्तयेघः शतानन्समान्धीः शतपंचप्रमायसाएनएनेश्वरः करने सहस्रायतीनाइ विवाहमा मा यापते स्वयं जिसहस्र समायत्य निमेश र श्रं वेच साहस्रमा व मकोटिविमोहनः इशासाहस्त्रमारस्यभवद्शम् से श्वरं २२ वृचिवंशास्त्रहित्रण चनांदशिति। जिति क् ल्लावर्तनमा जेए लक्षावितसमाभवेत् १३ लक्ष्त्रयावर्त्तना तु महाहेवितिव्यति लक्ष्यक्रहे यत्यकलाव चक्त संयतः २७ इशलक्षायत्तिना व दशिवाषि हत्तमा वच्चियति सक्षेत्व दशिवचित्रच भवत्रप वंचा शब्दा स्वामा कत्यामा का कारा माने में ब्रोहिमा ब्रामिको विकाली व रहित देशवा वर्रामा